International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

गोडवाड़ क्षेत्र में मीणा समाज की सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास

Ghanshyam lal dhaker

NET- History

सारांश

इस शोध-पत्र में मारवाड़-गोडवाड़ क्षेत्र में स्थित प्राचीन मीणा जनजाति के गौरवमयी इतिहास का वर्णन किया गया है। राजपूतों के आगमन से पहले, यह क्षेत्र मूल निवासियों के अधिकार क्षेत्र में था, जिनकी संस्कृति और परंपराएँ समृद्ध थीं, हालांकि उनका अधिकार क्षेत्र सीमित और स्थानीय था। इन मूल निवासियों की सामाजिक संरचना उतनी विकसित नहीं थी कि वे अपने इतिहास को लिखित रूप में प्रस्तुत कर पाते, जिससे उनका इतिहास मौखिक परंपरा पर आधारित था। जैसे वेदों का ज्ञान श्रुति पर आधारित था, वैसे ही मीणाओं का गौरवपूर्ण इतिहास भी पीढ़ी दर पीढ़ी एक-दूसरे को सुनाया जाता रहा।मीणाओं की वीरता और साहस का इतिहास समय के साथ दबाया नहीं जा सका और आधुनिक इतिहासकारों ने स्वाभाविक रूप से उनका उल्लेख करना शुरू किया। यही सत्य था, जो समय के साथ बाहर आकर सामने आया। काल के प्रवाह में मीणा जनजाति को शासक से लेकर, चोर-डाकू और फिर खेतिहर मजदूर तक के रूप में जीने को मजबूर किया गया, लेकिन उनका वीरता का गुण हमेशा उनके साथ बना रहा। यही वीरता मीणा जनजाति को प्राचीन काल में अपने छोटे-बड़े राज्य स्थापित करने में मदद करती थी।

राजपूतों के आगमन के साथ ही मीणाओं से उनकी सत्ता छीन ली गई, और उन्हें जंगलों में शरण लेने के लिए मजबूर किया गया। यहां उन्होंने अपने 'मेवासे' स्थापित किए और संघर्ष के मार्ग को चुना, जो अंततः महाराणा प्रताप जैसे महान शासक के संघर्ष का आधार बना। उनका इतिहास चुनौतीपूर्ण रहा और वे हमेशा शासकों के लिए एक चुनौती बने रहे। अंग्रेजों की तोपों और बंदूकों ने उन्हें नियंत्रण में किया, लेकिन उनकी स्वतंत्रता की भावना को कभी भी पूर्ण रूप से दबाया नहीं जा सका। इसी वीरता के कारण, अंग्रेजों ने मीणाओं को सेना में भर्ती करने के लिए विशेष रूप से एरिनपुरा छावनी में भर्ती किया।

कुटशब्द: मारवाड़-जोधपुर संभाग, गोडवाड़-पाली, जालोर, सिरोही क्षेत्र, मीना-मीणा, मूलनिवासी-आदिवासी, चौहान-राजपूतों की शाखा, मेवासा-मीणाओं के रहने का स्थान।

भूमिका

राजस्थान राज्य का एक महत्वपूर्ण उपभाग, जिसमें पाली, जालोर, और सिरोही जिले शामिल हैं, उसे गोडवाड़ क्षेत्र कहा जाता है। हालांकि यह क्षेत्र किसी निश्चित सीमा में बांधना कठिन है, यह अरावली पर्वत की श्रृंखला के पास पश्चिमी राजस्थान में स्थित है। गोडवाड़ क्षेत्र में पाली जिले के देसूरी, नाडोल, घाणेराव, रानी, बाली, और सुमेरपुर तहसील, जालोर जिले की आहोर और जालोर तहसील, और उत्तरी सिरोही जिले का क्षेत्र सम्मिलित किया जा सकता है। मध्यकाल में यह क्षेत्र मेवाड़ और मारवाड़ के बीच सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था।

गोडवाड़ क्षेत्र के नामकरण को लेकर विभिन्न किवदंतियाँ प्रचलित हैं। एक मत के अनुसार, 'गोड़' शब्द का अपभ्रंश रूप गोद से लिया गया है, जिसका तात्पर्य अरावली पर्वत की गोद में बसे इस क्षेत्र से है, जिससे इसका नाम गोडवाड़ पड़ा। वहीं, दूसरे मत के अनुसार, गोंद की अधिकता के कारण इसे गोडवाड़ कहा गया। हालांकि, इतिहासकारों ने इस नामकरण को लेकर कई भिन्न अवधारणाएँ प्रस्तुत की हैं, जो तार्किक दृष्टि से विवादास्पद हैं।
इतिहासकार श्री रमेशचंद्र गुणार्थी ने अपनी पुस्तक 'राजस्थानी जातियों की खोज' में उल्लेख किया है कि "गोडवाड़ में देसूरी और नाडोल पर गोड जाति के मीणों का अधिकार था, लेकिन मेवाड़ के महाराणा रायमल के पुत्र पृथ्वीराज ने इन ठिकानों को छीन लिया।" इस तथ्य से यह स्पष्ट होता है कि गोडवाड़ का नामकरण प्राचीन गोड गोत्रीय मीणों के लंबे समय तक इस क्षेत्र पर शासन करने के कारण हुआ।दूसरी ओर, इतिहासकार शंकरलाल मीणा के अनुसार, "गोडवाड़ का नामकरण गोड़ मीणा शाखा के लंबे समय तक रहे अधिपत्य या प्रभुत्व के कारण हुआ था।" इस प्रकार, यह नामकरण इस क्षेत्र में गोड मीणा जाति की प्रभावशाली उपस्थिति का प्रतीक था।

वर्तमान में गोडवाड़ में बसी मीणा जनजाति और इसकी प्राचीनता

गोडवाड़ क्षेत्र में बसी मीणा जनजाति इस क्षेत्र की प्राचीनता और ऐतिहासिक महत्व का एक जीवंत प्रमाण प्रस्तुत करती है। कर्नल टॉड, श्यामलदास और राजस्थान के कई इतिहासकारों के अनुसार, मेर, मेद, मेव और मीना जैसी जातियाँ मूल रूप से एक ही समुदाय से उत्पन्न हुई थीं। यह तथ्य इस बात को स्पष्ट करता है कि मीणा जनजाति भारतीय उपमहाद्वीप और विशेष रूप से राजस्थान की प्राचीनतम जनजातियों में से एक है।
मीणा शब्द की उत्पत्ति धार्मिक शास्त्रों में भगवान विष्णु के मत्स्य अवतार से हुई है, जिसे हिन्दी में मछली और संस्कृत में 'मीन' कहा जाता है। 'मीन' से 'मीना' और फिर 'मीणा' शब्द का रूपांतरण हुआ। राजस्थानी भाषा में 'न' को 'ण' कहा जाता है, जैसे 'जन' को 'जण', 'नेन' को 'नैण' और 'मनक' को 'मणक' के रूप में बोला जाता है। इसी प्रकार, राजस्थानी भाषा में 'मीण' शब्द को 'मीन' के रूप में भी संदर्भित किया गया है।
इतिहासकार हरमन गाइन ने अपनी पुस्तक **"द आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर ऑफ बीकानेर"** में सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त मुहरों के आधार पर लिखा है कि मीणा जनजाति के लोग उसी मत्स्य जाति से उत्पन्न हुए थे, जिसे राजा सुदास ने परास्त किया था और जो बाद में महाभारत के युद्ध में शामिल हुई।प्राचीनता के प्रमाण के रूप में, महानजोदड़ो से प्राप्त मुहरों पर अंकित मछली के चिन्ह से मीणा जनजाति के अस्तित्व का संकेत मिलता है। वैदिक काल में भी मीणों की उपस्थिति का उल्लेख ऋग्वेद में 'मेनि' शब्द से मिलता है, जिसका अर्थ 'ब्रज' या 'ब्रजकाय' होता है।उत्तर वैदिक काल से लेकर महाजनपद काल तक, मत्स्य राज्य का स्वतंत्र अस्तित्व उत्तर भारत में बना रहा, जो मीणा जनजाति के प्रभाव का एक महत्वपूर्ण प्रमाण है। इस प्रकार, राजपूतों के आगमन से पहले मीणा जनजाति राजस्थान की प्रमुख शासक जातियों में से एक थी।
मीणा जनजाति का उद्गम महानजोदड़ो सभ्यता से माना जाता है। उस सभ्यता के पतन के बाद, मीणा जनजाति पंजाब के रास्ते उत्तर भारत में प्रवेश कर मत्स्य राज्य की स्थापना करने में सफल रही। इसके बाद, मीणा जनजाति दो भागों में विभाजित हो गई। एक शाखा अरावली पर्वत की दिशा में पश्चिम की ओर बढ़ी, जहां आज भी दक्षिण राजस्थान में इनकी बहुलता है और जहां इनकी राजनीतिक प्रभुता स्थापित थी, जो राजपूतों के आगमन से पूर्व कायम थी। दूसरी शाखा दक्षिण की दिशा में बढ़ी, जो कालांतर में 'पाण्डय' के नाम से प्रसिद्ध हुई।इतिहासकार मगलचंद मीणा ने मीणा और पाण्डय जातियों के बीच कई समानताएँ बताई हैं, जैसे दोनों जातियों का चिन्ह मछली होना, महाभारत काल में पाण्डवों और मीणों का मथुरा के समीप और मत्स्य राज्य पर अधिकार होना, तथा 'मारन' शब्द का प्रयोग दोनों जातियों के लिए किया जाना।

इस प्रकार, मीणा जनजाति की प्राचीनता, उनकी संस्कृति और संघर्षों का इतिहास न केवल राजस्थान, बल्कि भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीन सामाजिक संरचना को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

गोडवाड़ क्षेत्र में मीणा जनजाति का इतिहास और शक्ति का केन्द्र

जैसा कि पहले बताया गया है, मीणा जनजाति की एक शाखा अरावली पर्वत के साथ-साथ दक्षिण राजस्थान तक पहुँची और वहाँ मैदानी इलाकों में अपना प्रभाव स्थापित किया। यह क्षेत्र वर्तमान में राजस्थान के पाली, सिरोही और जालोर जिलों के अंतर्गत आता है, जिसे गोडवाड़ क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र में संघर्षों का सामना करते हुए मीणा जनजाति ने अपने राजनीतिक प्रभुत्व को स्थापित किया, जो राजपूतों के आगमन से पूर्व तक कायम था।
मथुरालाल शर्मा द्वारा लिखित **"कोटा राज्य का इतिहास"** में उल्लेखित है कि "सिरोही को मीणों का देश बताते हुए उनके धनुष-बाण की तारीफ विद्वानों ने की है।" यह इस बात का प्रमाण है कि मीणा जनजाति उस समय सिरोही और आसपास के क्षेत्रों में अपनी शक्ति और सैन्य ताकत के साथ काबिज थी। इस संदर्भ में एक अन्य ऐतिहासिक साक्ष्य से यह भी पुष्टि होती है कि मीणा जनजाति की सैन्य रणनीतियाँ और युद्ध कौशल उल्लेखनीय थे।
पृथ्वीराज रासो में मण्डोर के नाहरराय (नागभट्ट) प्रतिहार पर पृथ्वीराज चौहान के आक्रमण का वर्णन करते हुए नाहरराय के मित्र पर्वतराय नामक मीणा प्रमुख और उसके सिपाहियों का गौरवपूर्ण उल्लेख किया गया है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उस समय मारवाड़ में पर्वतराय मीणा जैसे शक्तिशाली शासक मौजूद थे जिनके पास अपनी सेना थी और जो शक्तिशाली सैन्य ताकत के रूप में माने जाते थे।
गोडवाड़ क्षेत्र के मीणों के शक्ति केन्द्रों में **जालोर** भी एक प्रमुख स्थल था, जिसका उल्लेख मीणा जनजाति के भाटों और ढोलियों द्वारा किया जाता है। जालजी मीणा द्वारा जालोर पर अधिकार की बात भी प्रमाणित होती है। इसके अलावा, **नाडोल** क्षेत्र भी मीणा जनजाति के अधिकार में था, जैसा कि बिन्धयराज चौहान की पुस्तक **"माँ आशापुरा का मन्दिर"** में उल्लेखित है। इस पुस्तक में यह भी लिखा गया है कि चौहान शासक को नाडोल पर अधिपत्य स्थापित करने से पहले मीणा जनजाति से भीषण संघर्ष करना पड़ा था। यह बताता है कि नाडोल क्षेत्र पर मीणों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष शासन था, और इसे हराए बिना किसी अन्य वंश का शासन स्थापित करना असंभव था।
यदि मीणा केवल लुटेरे होते तो उनकी संख्या बहुत कम होती और कोई भी शासक आसानी से उनसे निपट सकता था। लेकिन ऐसा नहीं था, और यही कारण था कि **चौहान लक्ष्मण** को **माँ आशापुरा** से प्रार्थना करनी पड़ी। पुस्तक के अनुसार, माँ आशापुरा ने लक्ष्मण को स्वप्न में दर्शन देकर उसे विजयी होने का आशीर्वाद दिया और कहा कि वह जल्द ही मालव देश से असंख्य घोड़े प्राप्त करेगा, जिन्हें विशेष जल से स्नान करा कर एक शक्तिशाली सेना तैयार करेगा। इस तरह की प्रेरणा और आशीर्वाद से लक्ष्मण को अपनी कठिनाइयों को पार करने की शक्ति मिली।
इससे यह स्पष्ट होता है कि मीणा जनजाति का न केवल सैन्य बल था, बल्कि इनकी सत्ता और प्रभाव गोडवाड़ क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, जो राजपूतों के आगमन से पहले तक कायम था। उनके संघर्षों और पराक्रम की गवाही देते हुए यह इतिहास एक प्रेरणा स्रोत बनता है, जो उनके साहस और साहसिक नेतृत्व को प्रदर्शित करता है।

गोडवाड़ में मीणा जनजाति का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक प्रभाव

इतिहास के पन्नों में मीणा जनजाति को अक्सर लुटेरों के रूप में प्रस्तुत किया गया है, विशेषकर गोडवाड़ और उसके आस-पास के क्षेत्रों में। लेकिन इस दृष्टिकोण से एक गहरी असंगति और गलतफहमी का संकेत मिलता है। जैसा कि आपने उल्लेख किया है, **माँ आशापुरा** ने लक्ष्मण को स्वप्न में घोड़े प्राप्त करने और एक विशाल सेना तैयार करने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार, यह सवाल उठता है कि यदि मीणा केवल लुटेरे थे, तो इतनी बड़ी

सेना तैयार करने की आवश्यकता क्यों पड़ी? **डॉ. दशरथ शर्मा** द्वारा दी गई घोड़ों की संख्या, जो हजारों में बताई गई है, इसका संकेत देती है कि यह केवल एक सामान्य संघर्ष नहीं था, बल्कि एक संगठित सैन्य शक्ति थी।

लक्ष्मण की सेना में केवल घोड़े ही नहीं, बल्कि पैदल सैनिक भी होंगे, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उनके पास एक विशाल और संरचित सेना थी। और यह केवल लुटेरे जनजाति के खिलाफ संभव नहीं था। इसका मतलब यह है कि मीणा जनजाति की अपनी सैन्य शक्ति थी, जो इतनी ताकतवर थी कि चौहान लक्ष्मण को उससे संघर्ष करना पड़ा। यह दर्शाता है कि मीणा जनजाति केवल एक अप्रतिबंधित लुटेरों का समूह नहीं, बल्कि एक संगठित और संघर्षशील जाति थी जो अपने अधिकारों के लिए लगातार संघर्ष कर रही थी।

इस प्रकार की सैन्य व्यवस्था और संघर्ष से यह स्पष्ट होता है कि **राजपूतों के आगमन से पूर्व**, गोडवाड़ क्षेत्र में मीणा जनजाति का प्रभाव और सत्ता स्थापित थी। यह विचार कि मीणा केवल लुटेरे थे और राजपूतों ने उन्हें केवल बाहर निकाला, इतिहास के तथ्यों से मेल नहीं खाता। जैसा कि आपने सही रूप से बताया, **सीहाजी** द्वारा मीणों के उन्मूलन के संदर्भ में भी यही दिखाया गया है कि मीणा जनजाति के खिलाफ संघर्ष को अधिक महत्व दिया गया, और इसे राजपूतों की वैधता स्थापित करने के एक साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया।

राजपूतों के आगमन के बाद मीणा जनजाति की सत्ता को चुनौती दी गई, और इसे युद्धों और संघर्षों के माध्यम से ही समाप्त किया गया। लेकिन यहाँ यह सवाल भी खड़ा होता है कि क्या यह संघर्ष केवल एक जाति के खिलाफ था, या यह संघर्ष उन पुरानी सत्ता संरचनाओं के खिलाफ था जिन्हें राजपूतों ने चुनौती दी थी? यह भी विचारणीय है कि मीणा जनजाति अपने प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए राजपूतों की सैन्य शक्ति के मुकाबले खड़ी थी, और यह संघर्ष केवल सत्ता के लिए नहीं, बल्कि उनकी पहचान और अस्तित्व के लिए था।

इतिहास लेखन में मीणा जनजाति को अक्सर **"लुटेरे"** या **"अशांतिप्रिय"** के रूप में चित्रित किया गया है, जिससे उनके इतिहास को तोड़ा-मरोड़ा गया। यह केवल उनके संघर्षों और सत्ता को नकारने की कोशिश थी। **मीणा जनजाति** के बारे में यह विचार भी पूरी तरह से गलत है कि वे किसी अवैध संतान थे या कि उनकी उत्पत्ति अशुद्ध थी। असल में, **मीणा जनजाति** की उत्पत्ति **सिंधु सभ्यता** से पहले के समय में हो चुकी थी, और वे प्राचीन भारतीय समाज के मूलनिवासी थे।

यह कहना उचित होगा कि गोडवाड़ और उससे जुड़े क्षेत्रों में मीणा जनजाति का प्रभुत्व और शक्ति इतिहास के पन्नों में अनदेखी की गई है। इन संघर्षों को समझने के लिए हमें मीणा की सामरिक और राजनीतिक भूमिका को सही दृष्टिकोण से देखना होगा, और यह स्वीकार करना होगा कि वे केवल लुटेरे नहीं, बल्कि अपने समय की एक सशक्त और संघर्षशील जनजाति थे। राजपूतों के आगमन से पहले मीणा जनजाति गोडवाड़ क्षेत्र में काबिज थी, और उनका संघर्ष केवल सत्ता के लिए नहीं, बल्कि अपनी पहचान और अस्तित्व की रक्षा के लिए था।

सारांश:

गोडवाड़ और आस-पास के क्षेत्रों में मीणा जनजाति की भूमिका को ऐतिहासिक दृष्टिकोण से समझने में अक्सर गलतफहमी रही है। मीणा जनजाति को प्राचीन काल में लुटेरे और असंतिप्रिय बताया गया, जबकि वास्तविकता यह है कि वे एक संगठित और संघर्षशील शक्ति थे, जिनकी सैन्य व्यवस्था राजपूतों से पूर्व गोडवाड़ क्षेत्र में प्रभावी थी। डॉ. दशरथ शर्मा द्वारा दिए गए आंकड़े, जिनमें घोड़ों की संख्या हजारों में बताई गई, यह दर्शाते हैं कि मीणा जनजाति के पास एक बड़ी सेना और सैन्य शक्ति थी।

मीणा जनजाति का संघर्ष केवल लुटेरे की तरह नहीं था, बल्कि वे अपनी सत्ता और अस्तित्व के लिए लगातार संघर्ष कर रहे थे। सीहाजी और लक्ष्मण द्वारा मीणा जनजाति के खिलाफ की गई कार्रवाई यह स्पष्ट करती है कि मीणा

जनजाति ने राजपूतों के सामने चुनौती पेश की थी। इसके बाद इतिहास लेखन में मीणा जनजाति को अक्सर नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया, जिससे उनकी वास्तविक भूमिका और पहचान को तोड़ा-मरोड़ा गया। असल में, मीणा जनजाति की उत्पत्ति सिंधु सभ्यता से पहले की है, और वे प्राचीन भारतीय समाज के मूलनिवासी थे। उनका संघर्ष और सत्ता प्राप्ति केवल एक जाति के खिलाफ नहीं, बल्कि एक पुरानी शक्ति संरचना को चुनौती देने का परिणाम था। इसलिए, यह कहना उचित होगा कि मीणा जनजाति केवल लुटेरे नहीं, बल्कि एक सशक्त और संघर्षशील जाति थे, जिनका इतिहास गोडवाड़ और अन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण था।

संदर्भ:

1. यशोदा मीणा, *मीण जनजाति का इतिहास*, जयपुर पब्लिशिंग हाउस जयपुर, संस्करण प्रथम, 2013, पृ. 12
2. रमेशचन्द्र गुणार्थी, *राजस्थानी जातियो की खोज*, प्रकाशन, संस्करण, पृ. 91
3. शंकरलाल मीणा, *मीना जनजाति का इतिहास*, प्रथम संस्करण 2019, लिटरेरी सर्किल प्रकाशन जयपुर, पृ. 374
4. सं. जगतनारायण मधुरालाल शर्मा कृत, *कोटा राज्य का इतिहास*, राजस्थानी एण्थागार जोधपुर, द्वित्तीय संस्करण 2008, पृ. 36
5. रावत सारस्वत, *मीणा इतिहास*, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर, तृत्तीय संस्करण 2012, पृ. 107
6. राम गोपाल मीना व हर्ष मीना, *मीना जनजाति एवं ब्रिटिश राज*, राज पब्लिशिंग हाउस जयपुर, संस्करण 2014, पृ. 1
7. शोधा मीणा, *मीणा जनजाति का इतिहास*, जयपुर पब्लिशिंग हाउस जयपुर, प्रथम प्रमाण 2023, पृ. 6
8. वही, पृ. 12
9. रावत सारस्वत, *मीणा इतिहास*, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर, तृत्तीय संस्करण 2012, पृ. 116
10. वही, पृ. 108
11. राम गोपाल मीणा व हर्ष मीना, *मीना जनजाति एवं ब्रिटिश राज*, राज पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, संस्करण 2014, पृ. 5